रामायण एवं महाभारत में स्त्री अस्तित्व का समीक्षात्मक अध्ययन

अखिलानन्द उपाध्याय

शोध छात्र, डॉ राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, जौनपुर,

विश्वविद्यालय-वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 6, Issue 2
Page Number : 41-47

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

शोधसारांश- वैदिक काल, रामायण और महाभारत काल की मीमांसा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि स्त्री को गरिमामयी और गौरवशाली अस्तित्व हर युग में प्राप्त था। कन्याएं पिता के लिए लक्ष्मी होती थी और उन्हें पुरूषों की तुल्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वैदिक काल में भूरिश: ऋषिकाओं का वर्णन स्पष्ट प्रमाण है इसका। रामायण और महाभारत काल की स्त्रियों पर विचार किया जाए तो कुछ प्रसंगों को छोड़कर यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्त्री और पुरुष में संभवत भेद कहीं भी परिलक्षित नहीं होता है ।इस काल में स्त्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएं प्रदान की जाती थी। यहां तक कि उन्हें युद्ध में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। साथ ही रामायण और महाभारत हमें यह वैश्विक संदेश है देते हैं कि रामायण और महाभारत में युद्ध केवल और केवल स्त्री सम्मान में लड़ा गया। भगवान श्री राम द्वारा राम सेतु का निर्माण केवल अपनी अर्धांगिनी के लिए नहीं अपितु स्त्री अस्मिता के लिए किया गया था।

मुख्य शब्द- वैदिक काल , रामायण, महाभारत, स्त्री, शिक्षा, अधिकार।

भारतीय वाङ्मय में स्त्री शक्ति का जो अस्तित्व परिलक्षित होता है वह अन्यत्र कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। **"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:"** भारतीय वाङ्मय का यह वैश्विक उद्घोष संपूर्ण संसार में गुंजायमान होता है। और यह संदेश देता है कि जहां पर नारी की पूजा और सम्मान होता है वहीं पर देवता निवास करते हैं अन्यथा नहीं। अर्थात जिन जिन घरों एवं समाज में स्त्री का सम्मान होता है वहां देवी देवताओं का वास होता है और जहां सम्मान नहीं होता है वहां वास नहीं होता है अर्थात दरिद्रता का वास हो जाता है। **"मात्रृवत् परदारेषु"** के रूप में नैतिक उद्घोष जन जन के श्रवणेन्द्रिय के मार्ग से अंत:स्थल में प्रत्येक मानव के मन मस्तिष्क में प्रत्येक स्त्री को माता के रूप में स्थापित करता है। भारतीय वाङ्मय में स्त्री को दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, सीता आदि के रूप में देखा जाता है। यहां पर अर्धनारीश्वर के स्वरूप के द्वारा स्पष्ट संदेश दिया गया है कि नारी के बिना पुरुष का अस्तित्व पूर्ण नहीं हो सकता है। भारतीय वाङ्मयअथवा सभ्यता में देवताओं के अस्तित्व के साथ-साथ देवी के अस्तित्व की कल्पना हुई है जैसा कि वर्तमान सभ्यताओं में परिलक्षित नहीं होता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारतीय वाङ्मय में देवताओं से पहले देवी का नाम लिया जाता है, यथा- लक्ष्मी नारायण ,सीताराम ,राधा कृष्ण ,पार्वती शंकर और यहां तक कि पिता माता नहीं माता पिता कहा जाता है, फिर भी कुछ नकारात्मक विचारधारा के महापुरुष फेमिनिज्म का रोना रोते हैं ।रामायण और महाभारत काल से पूर्व यदि वैदिक युग की बात करें तो जब वर्तमान में अनेक सभ्यताओं का जन्म भी नहीं हुआ था तब हमारे यहां ऋषिकाएं हुआ करती थी। अर्थात उन्हें पुरुष वर्ग के समान शिक्षा का अधिकार था। ऋग्वेद में 24 अथर्ववेद में 5 मंत्र दृष्टिकाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।जिनमें कुछ विशेष नाम इस प्रकार हैं सूर्य सावित्री, सिकता निवावरी, यमी वैवस्वति, अदिति अपाला, आत्रेयी, उर्वशी, नदी, गोधा, आरडी वाक् आम्भृणी, पोलोमी, सची, सर्पराज्ञी, सूर्या सावित्री , इंद्राणी आदि ।

उपर्युक्त तथ्यात्मक विवरण उदाहरण यह प्रमाणित करते हैं कि विश्व में स्त्री अस्तित्व की कल्पना और इतना सम्मान शिक्षा का अधिकार लाखो वर्ष पूर्व वैदिक काल में देवी तुल्य नारी को प्राप्त था। वेदों में तो स्त्री को **'जायेदस्तम्'**(3.53.4) अर्थात स्त्री को ही घर कहा गया है। स्त्री को गृह साम्राज्ञी तक कहा गया है-

" सम्राज्ञी श्वसुरे भव , सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव , सम्राज्ञी अधि देवृषु।।" ऋग्वेद 10.85.46

स्त्री को भारतीय वांग्मय में अर्धांगिनी कहा गया है अर्थात स्त्री के बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो सकता। जिसका प्रमाण रामायण में भी प्राप्त होता है तब,जब भगवान रामेश्वरम् में यज्ञ के दौरान माता सीता की प्रतिमूर्ति बनाकर ही यज्ञ को पूर्ण करते हैं। ऋग्वेद में तो स्त्री को 'ब्रह्मा' तक कह दिया गया है- **" स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।"**

इससे उत्कृष्ट प्रमाण स्त्री के अत्यंत गौरवमयी अस्तित्व का क्या हो सकता है जब स्त्री को ब्रह्मा कह दिया गया हो।इसका अर्थ यही है कि स्त्री शिक्षा में उत्कृष्ट होती थी वह बालकों को शिक्षा प्रदान करने के साथ यज्ञ में भी ब्रह्मा का स्थान ग्रहण कर सकती थी, तथा विविध संस्कार करवा सकती थी। वेदों में तो स्त्री सेना का भी उल्लेख है ।अथर्ववेद में भी वर्णन प्राप्त होता है कि स्त्री अपने पति के साथ यज्ञ और युद्धों में जाती थी-

" स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे"- ऋग्वेद 5.30.9

" स होत्रं स्म पुरा नारी समनं...गच्छति" अथर्ववेद 20.126.10

ऋग्वेद और यजुर्वेद में स्त्री शक्ति के लिए कुछ ऐसे विशेषण का प्रयोग किया गया है जो उनके सारे एवं गौरवशाली अस्तित्व का अद्भुत वर्णन करते हैं अथवा स्त्री शक्ति की महिमा और उसके अस्तित्व को परिभाषित करते हैं यथा -स्त्री को अषाढ़ा (अजेय), सहमाना (विजयिनी), सहस्रवीर्या (असंख्य पराक्रम वाली), असपत्ना (अशत्रु) , सपत्नघ्नी (शत्रु नाशक), जयंती (विजेता), अभिभूवरी (हरा देने वाली) कहा गया है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि वैदिक काल में स्त्री शक्ति को वह संपूर्ण अधिकार प्राप्त थे जो पुरुष को प्राप्त थे। और स्त्री सशक्तिकरण की जो बात आज आधुनिक दौर में किया जाता है उसकी उच्चतम पराकाष्ठा

लाखों वर्षों पूर्व वैदिक काल में दृष्टिगोचर होता है। तदनंतर रामायण और महाभारत काल में स्त्री शक्ति की दशा अथवा स्थिति की बात करें तो नारी सशक्तिकरण उसके अस्तित्व के उत्कर्ष का प्रमाण विपुल मात्रा में उपलब्ध होता है। सर्वप्रथम रामायण की बात करें तो रामायण काल मैं स्त्री अस्तित्व में अत्यल्प न्यूनता आती है तब जब भगवान श्री राम का वनगमन होता है, तब माता कौशल्या राजा दशरथ से अयोध्या कांड के 61 वे सर्ग में कहते हैं कि-

" गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया गतिरात्मजः ।

तृतीया ज्ञातयो राजंश्चतुर्थी नैव विद्यते।।"

अर्थात हे राजन!नारी का एक सहारा उसका पति है दूसरा उसका पुत्र तथा तीसरा सहारा उसके भाई बंधु बांधव आदि रहे हैं चौथा उसके लिए कोई सहारा नहीं है। इस प्रकार कौशल्या और दशरथ के संवाद से स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं स्त्री का अस्तित्व पिता, पति और पुत्र के अतिरिक्त नहीं था। किंतु इन संवाद के अतिरिक्त संपूर्ण रामायण में अन्यत्र कहीं भी स्त्री शक्ति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह नहीं है ।अयोध्या कांड के 198 सर्ग में माता सीता और अनसूया के संवाद में माता सीता अनुसूया से कहती हैं कि- **" स्नेहो मयि निपातितः"**

अर्थात मेरे पिता स्नेहवश मुझे गोद में ले लिया और 'यह मेरी बेटी है' ऐसा कह कर मुझ पर सारा स्नेहा उड़ेल दिया ।रामायण काल में कन्याओं को विविध प्रकार की शिक्षा देकर उन्हें सुसंस्कृत एवं शिक्षा से पूर्ण बनाया जाता था। सैनिक शिक्षा और अनेक प्रकार की शिक्षाओं से उसे सुशोभित किया जाता था। अयोध्या कांड के ही नवम सर्ग में मंथरा कैकई से कहती है कि-

" अपवाह्य त्वया देवी संग्रामान्नष्टयेतनः।

तत्रापि विक्षतः शस्त्रैः पतिस्ते रक्षितस्त्वया।।"

अर्थात शंबर युद्ध में कैकेई ने अपने आहत पति दशरथ को बचाकर सुरक्षा प्रदान किया था। यह प्रसंग इस बात का प्रमाण है कि रामायण काल में स्त्रियों को न केवल शिक्षा आदि अधिकार प्राप्त था अपितु वह युद्ध में भी भाग लेती थी ।जिसके बारे में इससे पूर्व वैदिक काल में स्त्री शक्ति के प्रसंग में बताया गया था प्रमाण सहित की स्त्रियां युद्ध में भी भाग लेती थी।

रामायण काल में स्त्री को वेद पाठ का अधिकार था ।वह वेदों का अध्ययन कर सकती थीं। नियमित रूप से स्त्रियां संध्योपासना तथा होम आदि किया करती थीं। सुंदरकांड के 14वें सर्ग में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि माता सीता संध्योपासना किया करती थी।

माता अनसूया तथा माता सीता के मध्य संवाद में माता अनुसूया माता सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं कि-

" दु:शीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः ।

स्त्रीणां आर्यस्वभवानां परमं दैवतं पतिः ।।"

अर्थात पति कैसा भी हो वह स्त्रियों के लिए परम देवता ही होता है। उपर्युक्त उदाहरण से यह तो स्पष्ट होता है कि स्त्री अधिनता उस काल में मुखरित थे। फिर भी इन सब के अतिरिक्त स्त्री को तत्कालीन समाज में सम्मान प्राप्त था ।इसलिए सुरक्षा का संपूर्ण भार परिवार और पुरुष पर होता था। सीता के अपहरण के बाद विभीषण एवं माल्यवान के द्वारा रावण को धिक्कारा जाना यह बतलाता है कि स्त्री अपमान तत्कालीन समाज में कदापि स्वीकार्य नहीं था ।

अरण्यकांड की 50वीं सर्ग में जटायु रावण से कहते हैं कि -" दारा रक्ष्या विमर्शनात्" अर्थात हे रावण! तुम्हारा सीता का अपहरण करना अनुचित है। क्योंकि स्त्री सदा सुरक्षा और सम्मान की पात्र होती है। यह सर्वविदित है कि स्त्री शक्ति का अपमान ही रावण जैसे शिव भक्तों का भी सर्वनाश कर देता है।

इस युग में विधवा स्त्री के प्रति समाज में किंचित मात्र भी असम्मान की भावना नहीं थी ,अपितु मांगलिक अनुष्ठानों में सधवा की तरह विधवा स्त्री भी प्रतिभाग लेती थी । रामायण मे सती प्रथा का कोई उल्लेख नहीं है। लंका कांड मे वध के उपरांत विभीषण माता सीता को शिविका में बैठा कर लाए जिसकी रक्षा राक्षस कर रहे थे ।उसी समय 114 वें सर्ग के श्लोक से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि उस समय पर्दा प्रथा नहीं था सदाचरण ही स्त्री का पर्दा माना जाता था-

" न गृहाणि न वस्त्राणि न प्रकारास्तिरस्क्रिया ।

नेदृशा राजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियाः ।।" रामायण,6 .114 .27

इस प्रकार यदि रामायण कालीन स्त्री की अस्मिता की बात करें तो वैदिक काल में स्त्री का जो गौरवशाली अतीत था लगभग वही सम्मान और शक्ति रामायण काल में भी प्राप्त था।

सामान्यतः तत्कालीन समाज में नारी के प्रति सम्मान ,बेटियों के प्रति सम्मान, स्नेह, शालीन व्यवहार तथा उच्चतम कोटि के शिष्टाचार का पालन किया जाता था ।

अब यदि महाभारत कालीन समाज में नारी के अस्तित्व पर दृष्टिपात करें तो जिस प्रकार से वैदिक काल में और रामायण काल में स्त्री समाज को सम्मान और समानता प्राप्त था वह कहीं न कहीं महाभारत काल में भी था ।महाभारत के अनुशीलन से हमें बोध होता है कि तत्कालीन समाज आज की अपेक्षा नारी के प्रति अधिक उदार था ।अगर महाभारत काल और समाज की बात करें तो हमें यह भी कहना होगा कि भारत भूमि विभिन्न आक्रमणकारियों द्वारा गुलाम बनाया गया था जिसमें आक्रांताओं ने अपने अपने संस्कृति को थोपने का कार्य किया। और साथ ही इतिहास प्रमाण है कि इन आक्रमणकारियों ने भारत के स्त्री समाज पर जो अत्याचार किया वह किसी से छिपा नहीं है ।जिसके इन असुरों की कुदृष्टि से स्त्री समाज के सुरक्षा के सुरक्षा के संदर्भ में कुछ कुप्रथाओं का जन्म हुआ जो धीरे-धीरे समाज के परंपरा का भाग बन गया। जिनमें वर्तमान में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। क्योंकि यह वही भारत भूमि है जहां देवताओं के साथ देवी कल्पना है, जहां देवताओं से पहले देवी का नाम लिया जाता है, जहां पर पिता से पहले माता पिता कहा जाता है यहां तक कि" यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" तक कह दिया गया है ।महाभारत के आदि पर्व में कहा गया है कि-

"अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः ।।" आदिपर्व 74.41

अर्थात भार्या को अर्धांगिनी और श्रेष्ठ मित्र तक कहा गया है। समानता का इससे श्रेष्ठतम उदाहरण अन्यत्र प्राप्त नहीं हो सकता है। स्त्री के प्रति सम्मान के भाव का उत्कृष्ट उदाहरण हमें तब प्राप्त होता है जब युधिष्ठिर विराट पर्व में कहते हैं की–

"इयं हि न प्रियं भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।

परिपाल्या च पूज्या ज्येष्ठेव च स्वसा।।"

अर्थात यह द्रौपदी हमारी प्रियपत्नी, प्राणाधिक प्रियतमा है ,माता की तरह परिपाल्या है ,और यह ज्येष्ठा भगिनी के समान पुज्या है। नारी शक्ति के प्रति इतनी उच्च आदर्शों वाले विचार से युक्त वाणी संभवतः ब्रह्मांड में किसी अन्य सभ्यताओं के द्वारा अब तक नहीं कही गई है ।

महाभारत काल में निर्धन ,रोगी पति की सेवा पूजा करने वाली स्त्री को देवी के तुल्य समझा जाता था। अन्यत्र दृष्टिपात करें तो बोध होता है कि महाभारत में जिन जिन स्त्रियों का का उल्लेख है उनमें दायित्व बोध और अधिकार अनुकूलन की क्षमता भी विद्यमान थी ।द्रौपदी द्वारा राजकोष का दायित्व संभालने और गांधारी का मंत्रणा सभा में साहचर्य इसी तथ्य पर प्रकाश डालता है। महाभारत काल के जिन नारी चरित्रों से हम सब का परिचय होता है उसका अस्तित्व केवल नारीत्व तक ही सीमित नहीं रहता है अपितु उनका पुरुषत्व भी पूर्णतः प्रकाशित है। अपने नारीत्व और पौरुष से समाज को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती हैं ।इनकी महिमा और आदर्श अत्यंत उच्च कोटि का है। कन्या का जन्म पिता के लिए भार मानने का उदाहरण संपूर्ण महाभारत में कहीं भी प्राप्त नहीं होता है। जैसा कि आजकल समाज के कुछ हिस्सों में दृष्टिगोचर होता है ।पुत्र और कन्या में अंतर नहीं माना जाता था महाभारत काल में –

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।" अनुशासन पर्व 45/11

महाराजा शांतनु ने वन में पड़े कृप और कृपी का तथा महाराज अश्वपति ने सावित्री के सभी संस्कार कराए थे। विवाह के पूर्व कन्या को अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। कन्याओं द्वारा पिता के कार्य में सहयोग प्राप्त होता था ।पिता के ही आदेश से धीवर कन्या सत्यवती नाव द्वारा यात्रियों को नदी पार कराती थी ।कुंती और शकुंतला अतिथिसपर्या में नियुक्त थी। तत्कालीन समाज में यहां तक कि कन्या को वर चुनने का अधिकार प्राप्त था। जिसके लिए स्वयंवर आयोजित होता था ।स्वयंवर के साथ कन्याओं को आजीवन कुमारी रह कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करने का भी अधिकार प्राप्त था ।योगिनी सुलभा नामक कन्या का वृतांत महाभारत में वर्णित है ।

महाभारत में नारी उत्कर्ष के लिए सतीत्व की रक्षा को मुख्य स्थान प्राप्त था इस काल में सभा समितियों में स्त्रियों के भी बैठने की व्यवस्था होती थी ।महाभारत काल में भी बहुपत्नी प्रथा विद्यमान था। कश्यप की पत्नी कद्रू और विनीता ,पांडु की पत्नी कुंती और माद्री आदि अनेक ऐसे उदाहरण हैं ।

निष्कर्षत: वैदिक काल , रामायण और महाभारत काल की मीमांसा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि स्त्री को गरिमामयी और गौरवशाली अस्तित्व हर युग में प्राप्त था। कन्याएं पिता के लिए लक्ष्मी होती थी और उन्हें पुरूषों की तुल्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त था ।वैदिक काल में भूरिश: ऋषिकाओं का वर्णन स्पष्ट प्रमाण है इसका। रामायण और महाभारत काल की स्त्रियों पर विचार किया जाए तो कुछ प्रसंगों को छोड़कर यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्त्री और पुरुष में संभवत भेद कहीं भी परिलक्षित नहीं होता है ।इस काल में स्त्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएं प्रदान की जाती थी। यहां तक कि उन्हें युद्ध में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। साथ ही रामायण और महाभारत हमें यह वैश्विक संदेश है देते हैं कि रामायण और महाभारत में युद्ध केवल और केवल स्त्री सम्मान में लड़ा गया। भगवान श्री राम द्वारा राम सेतु का निर्माण केवल अपनी अर्धांगिनी के लिए नहीं अपितु स्त्री अस्मिता के लिए किया गया था। ऐसे अनुपम और अद्वितीय उदाहरण अन्यत्र जगत में में कहीं भी प्राप्त नहीं होते हैं। स्त्री सम्मान के लिए युद्ध करने वाले भगवान श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए तो स्त्री अपमान में रावण ब्रह्म ज्ञानी होते हुए भी दुर्दशा को प्राप्त हुआ था। स्त्री अपमान के कारण दुर्योधन ,दु:शासन और कर्ण की जो दुर्दशा और अंत हुआ उससे संपूर्ण संसार अवगत है ।और पांडवों ने स्त्री सम्मान के लिए निरंतर संघर्ष किया तो उन्हें अंततोगत्वा परमधाम की प्राप्ति हुई। रामायण में ऐसा प्रसंग भी आता है जब समुद्र को लांघते समय सुरसा नामक त्री को भी श्री हनुमान जी ने विनम्रता पूर्वक माता कहते हुए करबद्ध निवेदन किया था ।जो दर्शाता है कि इन युगों में स्त्रियां सदैव पुजनीय होती थी। रामायण और महाभारत के उत्तर काल में भी एक ऐसा प्रसंग प्राप्त होता है कि जगद्गुरु शंकराचार्य और मंडन मिश्र आचार्य जी के शास्त्रार्थ के मध्य निर्णायक की भूमिका में मण्डन मिश्र जी की पत्नी को देखा गया है। ऐसा अद्भुत और उत्कृष्ट उदाहरण अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं होता है जहां पर स्त्री को धर्म ग्रंथ पर शास्त्रार्थ का विशेषाधिकार प्राप्त हो साथ ही साथ दो महापुरुषों के शास्त्रार्थ के मध्य निर्णायक की भूमिका में स्त्री शक्ति दृष्टिगोचर हो। वैदिक काल में स्त्री अस्तित्व का जो गौरवशाली अतीत था वही रामायण और महाभारत काल में भी प्रदर्शित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1- यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: – मनुस्मृति,

2- मातृवत् परदारेषु – हितोपदेश

3- जायेदस्तम् – ऋग्वेद 3.53.4

4- 4- सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव.... देवृषु- ऋग्वेद 10.85.46

5- स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे- ऋग्वेद 5.30.9

6- स होत्रं स्म पुरा नारी समनं.... गच्छति- अथर्ववेद 20.126.10

7- गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया... .. नैव विद्यते – अयोध्या काण्ड, सर्ग 61

8- स्नेहो मयि निपातित: – अयोध्या काण्ड, नवम सर्ग

9- अपवाह्य त्वया देवी संग्रामान्नष्टयेतनः . . . . पतिस्तेरक्षिस्त्वया - अयोध्या काण्ड, नवम सर्ग

10- दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः - सुंदरकाण्ड, सर्ग 14

11- दारा रक्ष्या विमर्शनात् - अरण्य काण्ड, सर्ग 50

12- न गृहाणि न वस्त्राणि. . . . वृत्तमावरणं स्त्रियाः - रामायण, 6.114.27

13- अर्धं भार्या मनुष्यस्य. . . . भार्या मूलं तरिष्यतः - आदिपर्व, 74.41

14- इयं हि न प्रियं भार्या. . . . ज्येष्ठेव च स्वसा - महाभारत, विराट पर्व

15- यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा - महाभारत, अनुशासन पर्व, 45.11